पंचम अध्याय

शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय - पंचम

5.0 भूमिका :-

भारत में शिक्षा का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि स्वयं मनुष्य का इतिहास लेकिन अध्यापक शिक्षा के इतिहास का उद्भव हाल ही में हुआ है। शिक्षा जीवन की अनिवार्यता है। यह जीवन को सरस एवं सजीव बनाती है तथा शारीरिक, मानसिक व अध्यात्मिक विकास को ऊर्जा प्रदान करती है। विद्यार्थियों के शिक्षा प्रदान करने के लिये योग्य शिक्षकों का होना आवश्यक है। क्योंकि संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की श्रृंखला में अध्यापक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, शिक्षा संबंध्णी सुविधाओं के लगातार सर्वेक्षणों से पता चलता है कि प्रारंभिक चरण में शिक्षा सुविधाओं और नामांकन का काफी विस्तार हुआ है। शिक्षा हमें इस योग्य बनाती है कि परिस्थितियों के अनुरूप उचित निर्णय लेकर सही मार्ग को चयन करने और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न अवसरों पर सही विकल्प का चुनाव कर सकें।

5.1 संक्षेपिका :-

संपूर्ण लघु शोध प्रबंध को पांच अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में शोध परिचय, द्वितीय अध्याय में शोध संबंधित अध्ययन, तृतीय अध्याय में समस्या, प्रविधि एवं प्रक्रिया, चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या तथा पंचम अध्याय में शोधसार निष्कर्ष एवं सुझाव तथा अंत में संदर्भ ग्रंथ एवं परिशिष्ट में उपयोग किये गये उपकरणों को लिया गया है। अध्यायवार संक्षिप्त जानकारी निम्नानुसार है :-

प्रथम अध्याय में प्रस्तावना, भारत में शैक्षिक विकास, शिक्षक प्रशिक्षण का विकास, सबके लिए शिक्षा का घोषणा पत्र, सर्व शिक्षा अभियान लक्ष्य, उद्‌देश्य, सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम, समस्या कथन, शोध कार्य में प्रयुक्त शब्दावली व अर्थ, शोध के चर, प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता, समस्या का सीमांकन, शोध के उद्‌देश्य, शोधकार्य की परिकल्पनयें इसकी महिती दी गई है।

द्वितीय अध्याय में सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण इससे संबंधित पूर्व अध्ययनों की जानकारी दी गई है। तृतीय अध्याय में शोध का शीर्षक के अध्ययन में प्रयुक्त शब्दावली एवं अर्थ, शोध उपकरण, प्रदत्तों का सारणीयन, प्रदत्तों के संकलन में उत्पन्न कठिनाईयां, प्रयुक्त सांख्यिकी आदि की जानकारी दी गई है।

5.2 शोध का शीर्षक :-

''सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत गुजरात में सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की सहायता एवं उपयोगिता का अध्ययन''

5.3 शोध उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध के निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं।

1. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में लिंग के आधार पर प्रशिक्षण सहायता का अध्ययन करना।
2. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में लिंग के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता का अध्ययन करना।
3. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में व्यवसायिक योग्यता के आधार पर प्रशिक्षण सहायता का अध्ययन करना
4. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में व्यवसायिक योग्यता के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता का अध्ययन करना।
5. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में अनुभव के आधार पर प्रशिक्षण सहायता का अध्ययन करना।
6. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में अनुभव के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता का अध्ययन करना।
7. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में कलस्टर के आधार पर प्रशिक्षण सहायता का अध्ययन करना।
8. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में कलस्टर के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता का अध्ययन करना।
9. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में क्षेत्र के आधार पर प्रशिक्षण सहायता का अध्ययन करना।
10. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में क्षेत्र के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता का अध्ययन करना।

5.4 शून्य परिकल्पना :-

1. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के शिक्षकों में लिंग के आधार पर प्रशिक्षण सहायता में साथक अंतर नहीं है।
2. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के शिक्षकों में लिंग के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता में सार्थक अंतर नहीं है।
3. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के शिक्षकों में व्यवसायिक योग्यता के आधार पर प्रशिक्षण सहायता में सार्थक अंतर नहीं है।
4. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के शिक्षकों में व्यवसायिक योग्यता के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता में सार्थक अंतर नहीं है।
5. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के शिक्षकों में अनुभव के आधार पर प्रशिक्षण सहायता में सार्थक अंतर नहीं है।
6. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के शिक्षकों में अनुभव के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता में सार्थक अंतर नहीं है।

7. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के शिक्षकों में कलस्टर के आधार पर प्रशिक्षण सहायता में सार्थक अंतर नहीं है।

8. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के शिक्षकों में कलस्टर के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता में सार्थक अंतर नहीं है।

9. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के शिक्षकों में क्षेत्र के आधार पर प्रशिक्षण सहायता में सार्थक अंतर नही है।

10. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के शिक्षकों में क्षेत्र के आधार पर प्रशिक्षण उपयोगिता में सार्थक अंतर नहीं है।

5.5 चर :-

विश्लेषण की सुविधानुसार चरों को निम्न भागों में वर्गीकृत किया गया है।

स्वतंत्र चर :-

लिंग (शिक्षक, शिक्षिका), व्यवसायिक योग्यता, अनुभव, क्षेत्र, ग्रामीण शहरी, कलस्टर

आश्रित चर :-

प्रशिक्षण सहायता, प्रशिक्षण उपयोगिता

शोध समस्या की सीमायें :-

शोध समस्या को निम्न सीमाओं तक केन्द्रित रखा गया –

1. भौगोलिक दृष्टि से इसे गोधरा जिला के कालोल तहसील के पांच क्लस्टर (अेराल, अडादरा, चलाली, मलाव, सणसोली) तक सीमित रखा गया।
2. अध्ययन प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों पर किया गया।
3. अध्ययन शासकीय ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में जो शिक्षक अध्यापन कर रहे हैं उन पर किया गया।
4. अध्ययन 200 शिक्षकों पर किया गया।

न्यादर्श चयन प्रक्रिया :-

अनुसंधानकर्ता ने न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया है, जिनमें 200 प्रदत्तों 121 पुरुष शिक्षक एवं 79 महिला शिक्षक थी।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :-

सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण की सहायता एवं उपयोगिता जानने के लिए 12 सेवाकालीन शिक्षण

प्रशिक्षण की सामग्री एवं मार्गदर्शिका का उपयोग करके निर्धारण मापनी बनाकर उसका उपयोग किया गया।

<u>प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी</u>

प्रदत्तों के विश्लेषण 'माध्य' मानक विचलन 'टी' अनुपात एवं प्रसरण विश्लेषण का उपयोग किया गया।

5.6 चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है

शोध उद्‌देश्य के आधार पर शून्य परिकल्पनाओं की सार्थकता का अध्ययन किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण की तालिका 5.1 में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक 5.1 प्रदत्तों का विश्लेषण

परिकल्पना क्रमांक	तालिका क्र.	प्रयुक्त सांख्यिकी	प्राप्त परिणाम	प्राप्त निष्कर्ष
1	4.1	टी अनुपात	−0.884	एन.एस.
2	4.2	टी अनुपात	−0.399	एन.एस.
3.	4.3	टी अनुपात	1.093	एन.एस.
4.	4.4	टी अनुपात	−1.938	एन.एस.
5.	4.5	टी अनुपात	2.104	एस.
6.	4.6	टी अनुपात	−1.259	एन.एस.
7.	4.7	प्रसरण विश्लेषण	0.140	एन.एस.
8.	4.8	प्रसरण विश्लेषण	0.917	एन.एस.
9.	4.9	टी अनुपात	−0.198	एन.एस.
10.	4.10	टी अनुपात	0.633	एन.एस.

5.7 निष्कर्ष एवं व्याख्या :-

1. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के शिक्षकों में लिंग का प्रशिक्षण सहायता पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया। प्रशिक्षण के नामांकन एवं जेन्डर शिक्षा के प्रशिक्षण पर लिंग का प्रभाव दिखाई दिया। इसका शेष प्रशिक्षण घटकों पर लिंग का प्रभाव नहीं दिखाई दिया।

2. शिक्षकों में लिंग का प्रशिक्षण उपयोगिता पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया। प्रशिक्षण के घटकों पर भी लिंग का कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया।

3. शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यवसायिक योग्यता का प्रशिक्षण सहायता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

4. योग्यता का गुणवत्ता व्यवस्थापन घटक पर प्रभाव पड़ता है। शेष घटकों में कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

5. शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के अनुभव के आधार पर प्रशिक्षण सहायता पर प्रभाव पाया गया। 10 साल से कम अनुभव वाले शिक्षक में ज्यादातर शिक्षा सहायक वेतन से असंतुष्ट हैं। शिक्षा सहायकों को माह का 2500/– रू. मिलता है। प्रशिक्षण सहायता के वैकल्पिक बाल शिक्षा घटक में प्रभाव दिखाई दिया। शेष प्रशिक्षण के घटक में अनुभव का कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया।

6. अनुभव के आध्यार पर प्रशिक्षण उपयोगिता पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया। प्राशिक्षण उपयोगिता के वैकल्पिक शिक्षा, टी.एल.एम., विकलांग शिक्षा एवं गुणवत्ता व्यवस्थापन घटकों पर अनुभव का प्रभाव दिखाई दिया। शेष घटकों पर अनुभव का कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया।

7. शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कलस्टर संबंधित प्रशिक्षण सहायता पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया। कलस्टर का प्रशिक्षण सहायता के घटकों पर भी कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया।

8. कलस्टर संबंधित प्रशिक्षण उपयोगिता पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया। प्रशिक्षण उपयोगिता बालमेला, विकलांग, जेन्डर शिक्षा के घटकों पर कलस्टर का प्रभाव दिखाई दिया। शेष घटकों पर कोई प्रभाव दिखाई नहीं दिया।

9. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र का भी प्रशिक्षण सहायता में कोई प्रभाव नहीं पाया गया है। प्रशिक्षण सहायता का वैकल्पिक शिक्षा घटक पर क्षेत्र का प्रभाव दिखाई दिया। शेष घटकों पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं पाया गया।

10. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र का प्रशिक्षण उपयोगिता में कोई प्रभाव नहीं पाया गया है। प्रशिक्षण उपयोगिता के घटकों पर भी क्षेत्र का कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया।

5.8 सुझाव :-

1. शिक्षकों में अपनी व्यवसायिक उन्नति हेतु सदैव जागरूक रहना चाहिए अपने विशिष्ट क्षेत्र में हुई अध्ययन शोधों तथा विविध प्रवृत्तियों से उसे अवगत होना चाहिये।

2. शिक्षकों के लिये संस्थान में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये जैसे, वाद विवाद प्रतियोगित वकतृत्व स्पर्धा, स्नेह सम्मेलन, निबंध लेख स्पर्धा आदि।

3. प्रारंभिक शिक्षकों एवं शिक्षा सहायकों की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का विकास करना चाहिए।

4. टी.एल.एम. निर्माण के लिए बी.आर.सी. एवं सी.आर.सी. क्षेत्र सामग्री का प्रदर्शन करना चाहिए।

5. शिक्षक प्रशिक्षण निरंतर होने चाहिये।

6. बालमेला का आयोजन करना चाहिए। पढ़ना लिखना गिनना प्रोजेक्ट को स्वीकार करना चाहिये।

7. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण देने के बाद जिल्ला एवं डायर द्वारा योग्य मोनीटरिंग की व्यवस्था करनी चाहिए।

8. वैकल्पिक शिक्षा, टी.एल.एम., विकलांग बालशिक्षा, जेन्डर शिक्षा के प्रशिक्षण को नवीन बनाकर शिक्षकों को ज्यादा सहभागी बनाना चाहिए।

9. प्राथमिक शिक्षकों का प्रशिक्षण नयी चुनौती के रूप में रखा जाना चाहिए।

5.9 भावी शोध हेतु सुझाव :–

1. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण पर शहरी शिक्षकों व शिक्षिकाओं में प्रशिक्षण सहायता संबंधी अध्ययन किया जा सकता है।

2. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की प्रशिक्षण उपयोगिता संबंधी तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

3. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण की सहायता एवं उपयोगिता के आधार पर ''कलस्टर रिसोर्स सेन्टर की केस स्टडी'' की जा सकती है।

4. डी.एड. तथा बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण कार्य की उपयोगिता का तुलनात्मक अध्ययन।

5. गुजरात के ग्रामीण शालाओं के शिक्षकों के वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन।